संस्कारित हों अपने नन्हें...

जैसा बीज होगा वैसा ही वृक्ष होगा वैसा ही उसका फल होगा।
बच्चों में जैसे डालोगे संस्कार, वैसा ही बनेगा उसका विचार और वैसे ही पायेंगे उससे सद् व्यवहार।

अच्छे संस्कारों से संस्कारित बच्चे बचपन से अच्छे कार्यों में प्रवृत्त होकर माता-पिता की प्रतिष्ठा एवं स्वयं के शुभ भविष्य का कारण बनते हैं। चूंकि संस्कार की जड़ें बचपन से जुड़ी होती हैं। बच्चों का दिमाग वह कोरा

स्लेट होता है जिस पर हम जो चाहें लिख सकते हैं।

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि 10 वर्ष की उम्र के पहले तक बच्चों में तीन शक्तियां बहुत ही पावरफुल स्थिति में होती हैं। हम उनका पूरा पूरा उपयोग कर बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकते है।

अनुकरण करने की शक्ति

विशेषकर माता पिता को 10 वर्ष की आयु तक सावधानी बरतनी चाहिए। बच्चों को संस्कारी बनाना है तो उन्हें उपदेश देकर हम नहीं सिखा सकते। बच्चे वही सीखते हैं जो माता पिता को करते देखते हैं। हमें स्वयं के व्यवहार में भी वहीं बातें अपनानी होंगी जो बच्चों के हित में हों। जैसे आपके गुण होंगे बच्चा वैसे ही सीखेगा। जो आप करते होंगे वैसा ही वो करेगा, जो सोचेंगे वह सोचेगा कि हम अपने पेरेंट्स से भी बढ़कर करें । अर्थात् जैसा बच्चा देखता है तुरंत वैसा ही करता है इसीलिए आप उन गुणों को और संस्कारों को अपने आप में पहले लाइए जिन गुणों व संस्कारों से आप बच्चों का श्रृंगार करना चाहते हैं।

ग्रहण करने की शक्ति

इसी उम्र में बच्चों को जो भी सिखाएंगे, जैसा सिखाएंगे वैसा ही वे ग्रहण कर लेते हैं। इसीलिए बच्चों को बहुत ही प्यार से धीरे से छोटे छोटे निर्देश देकर उनके व्यवहार में तब्दीली लाई जा सकती है। और हर बच्चा अपने आप में अलग और अनोखा होता है। हो सकता है हमारे पड़ोसी का बच्चा पढ़ाई लिखाई में बहुत अच्छा हो और हमारा बच्चा खेलकूद में। ऐसे में यदि बच्चा खेल में मेडल जीतकर आता है और पढ़ाई में अंक कम लाता है तो हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए और पढ़ाई पर भी ध्यान देने के लिए उसको प्रेरित करना चाहिए। साथ ही उसकी इस विशेषता को आगे बढ़ाने का प्रयास भी करना चाहिये। ताकि वह भविष्य में अच्छा खिलाड़ी बन सके।

रचनात्मक शक्ति

इस उम्र में बच्चों में यह शक्ति बहुत पाई जाती है। घर का वातावरण ऐसा बनाइए कि वे कुछ रचनात्मक गतिविधियां कर सकें और कुछ सीखें भी। इससे उनकी बुद्धि भी निखरती है।

बचपन एक ऐसा उम्र होता है जिसमें दिमाग अपने अंदर वही चीजें स्टोर करता है, जमा करता है जो वह अपने आसपास के वातावरण में देखता है। उसके आसपास ऐसा वातावरण बनाया जाए जिससे वे कुछ सीख सकें। जैसे दीवारों पर लगे चित्र, घर की पुस्तक, घर में बजते गीत इत्यादि।

आपने देखा होगा, आज कितने ही बच्चे बड़े होने के बाद अपने मां-बाप को घर से बाहर निकाल देते हैं, ऐसा क्यों होता है? क्योंकि मां-बाप अपने बच्चे के बीच प्यार को नहीं जोड़ पाते। वह सिर्फ उनको पालते रहते हैं, कभी प्यार से पुचकारते भी नहीं। सिर्फ पालने से या खिलाने से आप कभी किसी दूसरे इंसान का दिल नहीं जीत सकते।

माँ-बाप का प्यार भी

आप अपना कीमती समय बच्चों के बीच में व्यतीत करें। अपने स्नेह के वायब्रेशन्स उन्हें दीजिए। यही वक्त होता है जब एक बच्चा अपने मां बाप के साथ गहराई से जुड़ता है। तो उसको आपके साथ रहना घूमना फिरना बातें करना बाकी सब चीज़ों से ज़्यादा अच्छी लगेगी। उसका यह प्यार पूरी ज़िंदगी एक जैसा बना रहेगा, वह दिल से अपने मां-बाप और दूसरे लोगों से प्यार करे गा और आदर भी।

यदि बचपन से कुछ कुसंगत में रहकर कुछ संस्कारों का बीजारोपण हो गया तो उसके जीवन में दु:ख और असफलता ही रहेगी। इसलिए हमें अपने बच्चों की हर एक बात पर ध्यान देना होगा जैसे कि हमारा बच्चा कहां है और किसके साथ है। यदि ज़रा सी भी लापरवाही करते हैं और बच्चों की संगत की तरफ लापरवाह होते हैं और वो गलत संगत में चला जाता है तो उसको बिगड़ते देर नहीं लगती। इसके लिए समय समय पर अपने बच्चे के स्कूल में जाकर यह जानना चाहिए कि वह पढ़ाई कैसी कर रहा है और कैसे बच्चों के साथ उसकी दोस्ती है। जो भी हमारे महापुरूष व महान आत्मायें हो चुकी हैं, उनकी कहानियाँ, जीवनियाँ और संस्मरण सुनाइये। इससे उसका आत्मविश्वास जागृत होगा और उसके अंदर यह भावना जागृत होगी कि मुझे भी ऐसा बनना है।

बचपन से ही घर के वातावरण को सुसंस्कारित बनायें। उन्हें संस्कारित बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन स्वयं भी करें और उन्हें भी करायें। जिससे उनमें आत्मविश्वास की जागृति तो होगी ही, साथ साथ रचनात्मक कार्य करने का साहस भी उनमें बढ़ेगा।

जम्मू कश्मीर। इंडस्ट्रियल एंड कॉमर्स मिनिस्टर चंदर प्रकाश गंगा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मल बहन।

कानपुर-किदवई नगर। विधायक महेश त्रिवेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.आरती।

अयोध्या-उ.प्र.। महंत जन्मेजय शरण जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा।

दिल्ली-हरिनगर। ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में चेयरमैन प्रो. अनिल डी. सहर्षबुधे, डायरेक्टर डॉ. मनप्रीत सिंह मन्ना, ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. शल्लू, ब्र.कु. एन.के. चौधरी तथा ब्र.कु. देवेन्दर।

फतेहगढ़-उ.प्र.। रक्षाबंधन पर फौजी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुमन।

जयपुर-राज.। विधान सभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए उपक्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. सुषमा।

गोविंद नगर-जयपुर म्युज़ियम(राज.)। विधायक सुरेन्द्र पारेख को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रोज़ी।

जयपुर-बापूनगर। जलदाय मंत्री सुरेन्द्र गोयल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.जयन्ती।

शुक्लागंज-उ.प्र.। जिला कारागार में रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान जेल अधीक्षक ए.के.सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.पुष्पलता। साथ हैं ब्र.कु.अल्पना।